नीति काव्य

कबीर

कवि परिचय :

जन भाषा में भक्ति, नीति व दर्शन की किरणों का आलोक विकीर्ण करने वाले कवियों में कबीर अग्रगण्य हैं। कबीर का जन्म काशी में संवत् 1455 के लगभग माना जाता है ।

कबीर की प्रामाणिक उपलब्ध कृति 'बीजक' है। इसमें साखी, सबद और रमैनी तीन भाग हैं।

कबीर का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ जब समाज में कर्मकाण्ड का प्राचुर्य और आडम्बरपूर्ण आचार व्यवहार का प्राबल्य था।

कबीर शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा अनुभव को महत्व देते हैं। उन्होंने माना ब्रह्म एक है, जो कुछ भी दृश्य है वह माया है, मिथ्या है। उन्होंने माया का मानवीकरण कर उसे कंचन और कामिनी का पर्याय माना। उनका ईश्वर निर्विकार और अरुप है। उसे अवतार में प्रतिष्ठित न कर उन्होंने प्रतीकों में स्थापित किया। ब्रह्म को पति रूप मानने पर आत्मा उसकी प्रेयसी बन जाती है। प्रियतम और प्रेयसी के इसी संबंध में जो दाम्पत्य प्रेम लक्षित है, वहीं कबीर का रहस्यवाद है।

कबीर की भाषा पूरवी जनपद की भाषा है। इसे सधुक्कड़ी भाषा भी कहा गया है। यद्यपि उन्होंने भाषा सौष्ठव की ओर ध्यान नहीं दिया तथापि उनकी भाषा सरस और सुबोध है। अध्यात्म का मर्म समझाने के लिए उन्होंने रुपक और प्रतीकों के साथ उलटबांसी का प्रयोग भी किया।

कबीर ने जाति, वर्ग एवं सम्प्रदायों की सीमाओं का अतिक्रमण कर ऐसे मानव धर्म और मानव समाज की स्थापना की जिसमें विभिन्न दृष्टिकोण रखने वाले विभिन्न मताग्रही भी निःसंकोच सम्मिलित हो सकते हैं। कबीर का निर्मल व्यक्तित्व और निर्द्वन्द्व दृष्टिकोण इतना व्यापक और प्रभावशाली था कि उनके विचारों के आधार पर एक सम्प्रदाय ही चल पड़ा जिसे 'सन्त सम्प्रदाय' की संज्ञा मिली। इस सम्प्रदाय में दादू, सुन्दरदास, गरीबदास, चरनदास आदि सन्त कवि हुए हैं।

कवि परिचय :

बिहारीलाल

रीतिकाल की भावधारा को आत्मसात् करके भी आचार्यत्व से मुक्त रहने वाले कवि बिहारीलाल का जन्म संवत् 1652 वि. (सन् 1595 ई.) में ग्वालियर के पास गोविन्दपुर ग्राम में हुआ था। इनके पिता केशवराय, ग्वालियर छोड़कर ओरछा चले गए। वहीं इन्होंने आचार्य केशवदास से काव्यशिक्षा ग्रहण की। ओरछा में इन्होंने, काव्यग्रंथों और संस्कृत, प्राकृत का अध्ययन किया। आगरा जाकर इन्होंने उर्दू-फारसी का अध्ययन किया; वहाँ ये अब्दुर्रहीम खानखाना के सम्पर्क में आए। संवत् 1720 वि. (सन् 1663) में आपका स्वर्गवास हो गया ।

इनकी एक ही रचना 'सतसैया' मिलती है। इसमें 713 दोहे हैं। हिन्दी में समास-पद्धति की शक्ति का परिचय सबसे पहले बिहारी ने दिया। सांग-रूपकों का निर्वाह, पर्याय-व्यापारों के समाहार और विविध चेष्टाओं के एक साथ संयोजन की बहार बिहारी के चुस्त दोहों में देखी जा सकती है। सतसई के दोहों में अर्थ की गंभीरता और मार्मिक प्रभावोत्पादकता है। कम शब्दों में अधिक से अधिक मर्मस्पर्शी अर्थ की अभिव्यक्ति क्षमता होने के कारण इनकी प्रशंसा में कहा जाता है-

''सतसइया के दोहरे ज्यों नाविक के तीर।
देखन में छोटे लगें, घाव करें गंभीर।''

बिहारी की काव्य प्रतिभा बहुमुखी थी। नख-शिख वर्णन, नायिका भेद, प्रकृति चित्रण, रस-अलंकार सभी कुछ बिहारी की रचनाओं में उत्कृष्ट है। विदग्ध सूक्तियों के वे बादशाह हैं। अन्योक्तियाँ भी सुंदर हैं। इनके काव्य में रूपक, उत्प्रेक्षा, उपमा और श्लेष अलंकारों का प्रयोग दृष्टव्य है। बिहारी की भाषा ब्रज है। कहीं-कहीं बुन्देलखण्डी की भी छाप है। नख-शिख के अन्तर्गत इनकी अधिकतर रचनाएँ नेत्रों पर हैं।

बिहारी की व्याकरण से सधी हुई भाषा में मुहावरों के प्रयोग, सांकेतिक शब्दावली और सुष्ठु पदावली का समावेश है। भाषा प्रौढ़ एवं प्रांजल है। दोहे जैसे छोटे छन्द के माध्यम से बिहारी ने जितने विस्तारित अर्थों को प्रकाशमान किया है, वह अपूर्व है। रचनाओं में कवित्त शक्ति और काव्यरीतियों का जैसा सुन्दर सम्मिश्रण बिहारी में है वैसा किसी अन्य रीति कालीन कवि में अलभ्य है।

केन्द्रीय भाव -

समाज और व्यक्ति के सामंजस्य का आधार 'नीति' है। व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास के लिए समाज की भूमिका और समाज के उत्थान के लिए व्यक्ति का आचरण इन दोनों दिशाओं को साधने का लक्ष्य नीति में अंतर्निहित है। नीति काव्य जीवन-व्यवहारों से प्रकट होने वाले अनुभवों का एक ऐसा आकर्षक कोश है, जिसमें जीवन मूल्यों का संरक्षण होता है। नीतिगत चेतना का विकास ही उदात्त मानवीय प्रवृत्तियों का आधार निर्मित करता है। जीवन के संघर्षों और उलझनों में नीति कथन मानव का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इस रूप में नीति कथन शिक्षा का ही एक रूप होते हैं। यही कारण है कि प्राय: प्रत्येक युग के काव्य में नीति तत्व किसी न किसी रूप में विद्यमान रहता है।

नीति कथन बाल-मन पर गहरे संस्कार डालते हैं और वे जीवन में स्थायी बनकर निरंतर दिशा निर्देश की भूमिका का निर्वाह करते हैं। इसलिए कविता के स्थायी प्रभावों के अंतर्गत नीति कथनों का प्रभाव जीवन निर्माण हेतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। प्रत्येक युग के काव्य ने नीति से संबंधित उक्तियाँ प्रस्तुत की हैं। जायसी, कबीर, तुलसी, गिरधर, रहीम आदि कवियों ने अपने काव्य में नीति कथनों को पर्याप्त स्थान प्रदान किया है।

कबीर के काव्य में अनेक स्थलों पर नीति परक कथन सहजता से उपलब्ध हो जाते हैं। नीति कथनों का सीधा संबंध जीवनानुभवों से है, कबीर के पास गहरे जीवन अनुभव थे। इन्हीं अनुभवों के आधार पर कबीर के नीति कथन मार्मिक बन पड़े हैं। प्रस्तुत काव्यांशों में 'सत्संगति' के महत्व को रेखांकित करते हुए शिक्षा और उपदेश के महत्व को प्रतिपादित किया गया है। विभिन्न उपमाओं के माध्यम से सत्संग और कुसंग के भेद को कबीर ने गहराई से स्पष्ट किया है। 'विचार' के अन्तर्गत उन्होंने परिस्थितियों के परिवर्तन की ओर संकेत किया है। जो कभी शक्तिशाली होता है वह कभी निर्बल भी हो जाता है इसलिए शक्तिशाली को अभिमान नहीं करना चाहिए। 'वाणी' की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए उन्होंने वाणी संयम को जीवन की उपलब्धि माना है। जो अपनी वाणी पर संयम कर लेते हैं वे सभी जगह सफल होते हैं। उनकी 'उलटबांसियाँ' भी जीवन के रहस्यमय अनुभवों को व्यक्त करती हैं।

रीतिकाल के कवियों का प्रधान स्वर यद्यपि शृंगार केन्द्रित है किन्तु इस युग के कवि सामाजिक व्यवहार के भी कवि थे। इसलिए उनके काव्य में नीति कथनों का भी समावेश रहता है।

'बिहारी सतसई' के नीतिपरक दोहों ने जीवन व्यवहार के अनेक पक्ष प्रस्तुत किए हैं। संकलित दोहों में बिहारी ने सुंदरता को सापेक्षता में ही स्वीकार किया है। समय के फेर से सज्जन भी विपत्ति में पड़ जाते हैं। बुरे जनों को सम्मान मिलने लगता है। कोरी प्रशंसा से कोई बड़ा नहीं बनता है। अपने गुणों से ही व्यक्ति बड़ा बनता है। मनुष्य की विनम्रता ही उसे बड़ा बनाती है। समान संग होने पर ही शोभा बढ़ती है। बड़ों की भूल भूल नहीं कही जाती है। धन बढ़ने पर भी मन पर संयम रखना चाहिए। दुष्ट यदि दुष्टता करना छोड़ देता है तो उसे अनिष्ट की आशंका बढ़ जाती है। अवसरवाद केवल कुछ दिनों तक ही सम्मान दिला सकता है, जिस जल से प्यास बुझती है वही महत्वपूर्ण होता है आदि नीति सिद्धांतों को बिहारी ने अनेक उत्प्रेक्षाओं और रुपकों के माध्यम से व्यक्त किया है।

अमृतवाणी

1. संगति-

कबीर संगति साधु की, जो करि जाने कोय।
सकल बिरछ चन्दन भये, बाँस न चन्दन होय।।

कबीर कुसंग न कीजिये, पाथर जल न तिराय।
कदली सीप भुजंग मुख, एक बूँद तिर भाय।।

2. उपदेश-

देह धरे का गुन यही, देह देह कछु देह।
बहुरि न देही पाइये, अबकी देह सुदेह।।

जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम।
दोऊ हाथ उलीचिये, यही सयानो काम।।

3. विचार-

माटी कहै कुम्हार से, क्या तू रौंदे मोहि।
एक दिन ऐसा होयगा, मैं रौदोंगी तोहि।।

यह तन काँचा कुंभ है, लिये फिरै थे साथ।
टपका लागा फुटि गया, कछू न आया हाथ।।

4. वाणी-

शब्द सम्हारे बोलिये, शब्द के हाथ न पाँव।
एक शब्द औषधि करे, एक शब्द करे घाव।।

जिभ्या जिन बस में करी- तिन बस कियो जहान।
नहिं तो औगुन उपजै, कहि सब सन्त सुजान।।

5. विपर्यय- (उलट बांसियाँ)-

नदिया जल कोयला भई, समुन्दर लागी आग।
मच्छी बिरछा चढ़ि गई, उठ कबीरा जाग।।

तिल समान तो गाय है, बछड़ा नौ–नौ हाथ।
मटकी भरि–भरि दुहि लिया, पूँछ अठारह हाथ।।

– कबीर

दोहे

समै समै सुन्दर सबै, रूप कुरूप न कोय।
मन की रुचि जेती जितै, तिन तेती रुचि होय।।1।।

मरतु प्यास पिंजरा पर्‌यौ, सुआ दिनन के फेर।
आदरु दै दै बोलियतु, बायस बलि की बेर।।2।।

बड़े न हूजे गुननि बिन, बिरद बड़ाई पाय।
कहत धतूरे सों कनक, गहनो गढ़ौ न जाय।।3।।

नर की अरु नल नीर की, गति एकै करि जोय।
जेतो नीचो ह्वै चलै, तेतो ऊँचो होय।।4।।

सोहतु संगु समान सौं, यहै कहै सबु लोगु।
पान-पीक ओठनु बनै, काजर नैननु जोगु।।5।।

को कहि ''सकै बड़ेन सों, लखैं बड़ी यै भूल।
दीने दई गुलाब की, उनि डारनि वे फूल।।6।।

बढ़त बढ़त संपति-सलिलु, मन सरोजु बढ़ि जाइ।
घटत घटत सु न फिरि घटै, बरु समूल कुम्हिलाइ।।7।।

बुरौ बुराई जौ तजै, तौ चितु खरौ डरातु।
ज्यौं निकलंकु मयंकु लखि, गनैं लोग उतपातु।।8।।

दिन दस आदरु पाइकै, करि लै आपु बखानु।
जौ लगि काग! सराधपखु, तौ लगि तौ सनमानु।।9।।

अति अगाधु, अति औथरौ, नदी, कूप, सरु, बाइ।
सो ताकौ सागरु, जहाँ जाकी प्यासु बुझाइ।।10।।

– बिहारी

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. कबीर ने किसकी संगति करने के लिए कहा है ?
2. नाव में पानी भर जाने पर सयानों का क्या कर्त्तव्य है?

3. कबीर के अनुसार शरीर रूपी घड़े की विशेषताएँ बताइए।

4. बुरे आदमी द्वारा बुराई त्याग देने का खरे व्यक्तियों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

5. बड़प्पन प्राप्त करने के लिए केवल नाम ही काफी नहीं है। यह बात बिहारी ने किस उदाहरण के द्वारा कही है?

लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. मिट्टी कुम्हार को क्या सीख देती है?

2. कबीर ने शब्द की क्या महिमा बताई है?

3. एक ही वस्तु किसी को सुन्दर और किसी को कुरूप क्यों नजर आती है?

4. संपत्ति रूपी जल के निरन्तर बढ़ने से मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?

5. क्षणिक आदर प्राप्त कर आत्म प्रशंसारत व्यक्तियों का अंत क्या होता है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. कबीर कुसंग के दुष्प्रभाव को किन-किन उदाहरणों से स्पष्ट करते हैं, लिखिए।

2. देहधारी होने के कौन-कौन से गुण हैं?

3. 'नदिया जल कोयला भई' से कबीर का क्या तात्पर्य है?

4. नर और नल की तुलना कर बिहारी क्या कहना चाहते हैं?

5. 'सभी समानता में ही शोभा पाते हैं।' बिहारी ने किन उदाहरणों से इस कथन की पुष्टि की है?

6. **निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए-**

   (i) तिल समान तो..... अठारह हाथ।

   (ii) को कहि सकै बड़ेन..... वे फूल।

   (iii) मरतु प्यास पिंजरा..... की बेर।

   (iv) अति अगाधु अति..... जाकी प्यासु बुझाइ।

काव्य सौन्दर्य -

1. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए-**

   कुसंग, अज्ञ, अभ्यस्त, उदात्त

2. **निम्नलिखित तद्भव शब्दों को तत्सम में बदलिए-**

   पाथर, औगुन, सनमानु, मच्छी, काग

3. **निम्नलिखित छंदों की मात्राएँ, गिनकर छंद की पहचान कीजिए -**

   (1) समै समै सुन्दर सबै, रूप कुरूप न कोय।
   मन की रुचि जेती जितै, तिन तेती रुचि होय।

(2) को कहि सकै बड़ेन सौं, लखैं बड़ी यै भूल।
दीने दई गुलाब की, उनि डारनि वे फूल।।

4. **बिहारी के दोहों में से माधुर्य गुणयुक्त दोहे छाँटकर लिखिए।**

5. **निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार छाँटकर लिखिए -**

अति अगाधु अति औथरों, नदी, कूप, सरु, बाइ।
सौ ताकौं, सागरु, जहाँ जाकी, प्यासु बुझाइ।

6. **'कबीर की साखियों में उलटबाँसियों का प्रयोग हुआ है।' इस कथन की पुष्टि हेतु उदाहरण दीजिए।**

ध्यान दीजिए-

देह धरे का गुन यही, देह देह कछु देह।
बहुरि न देही पाइये, अबकी देह सुदेह।।

पद में 'देह' शब्द की आवृत्ति है। 'देह' शब्द के भिन्न-भिन्न अर्थ हैं। देह का एक अर्थ है - शरीर, दूसरा अर्थ है- 'देना'। अत: यहाँ यमक अलंकार है। जहाँ शब्दों या वाक्यांशों की आवृत्ति एक या एक से अधिक बार होती है किन्तु उनके अर्थ भिन्न-भिन्न होते हैं, वहाँ **यमक** अलंकार होता है।

जहाँ एक ही बार प्रयुक्त हुए शब्द से एक ही स्थान पर दो या दो से अधिक अर्थ निकलते हैं, वहाँ '**श्लेष**' अलंकार होता है।

उदाहरणार्थ -

'जे रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो करै, बढ़े अँधेरो होय।।

यहाँ 'बारे' का अर्थ 'लड़कपन' और 'जलाने' से है, और 'बढ़े' का अर्थ 'बड़ा होने' और 'बुझ जाने' से है।

जब कथन में देखने और सुनने पर निन्दा सी जान पड़े किन्तु वास्तव में प्रशंसा हो, वहाँ व्याजस्तुति अलंकार होता है। इसके विपरीत जहाँ कथन में स्तुति का आभास हो किन्तु वास्तव में निन्दा हो, वहाँ व्याज-निन्दा अलंकार होता है।

उदाहरणार्थ -

व्याज स्तुति - गंगा क्यों टेढ़ी चलती हो, दुष्टों को शिव कर देती हो।
व्याज निन्दा - राम साधु, तुम साधु सयाने। राम मातु भलि सब पहिचाने।।

इसी प्रकार जब कारण के होते हुए भी कार्य नहीं होता, वहाँ **विशेषोक्ति** अलंकार होता है। इसके विपरीत जब कारण न होने पर भी कार्य का होना बताया जाता है, वहाँ **विभावना** अलंकार होता है, जैसे-

विशेषोक्ति - मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं बिरंचि सम।

विभावना - बिनु पदचलै सुनै बिनु काना।
कर बिनु करम करै बिधि नाना।।

7. **यमक तथा श्लेष अलंकारों के उदाहरण लिखिए।**

8. **व्याज स्तुति तथा व्याज निन्दा अलंकार में अन्तर स्पष्ट कीजिए।**

योग्यता-विस्तार-

- कबीर के जन्म स्थान और निर्वाण स्थान की सैर कीजिए।
- कबीर -पंथ के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए।
- बिहारी औरंगजेब के राजपूत सेनापति मिर्जा राजा जयसिंह के दरबारी कवि थे। उन्होंने मिर्जा राजा जयसिंह को शिवाजी पर आक्रमण करने के लिए जाते समय कौन सा दोहा कहा- ज्ञात कीजिए और उसके प्रभाव की चर्चा कीजिए।
- कबीर तथा बिहारी के अतिरिक्त नीति परक दोहे हिन्दी के किन अन्य कवियों ने लिखे हैं, उनके नाम और पाँच-पाँच नीतिपरक दोहे लिखिए।

शब्दार्थ

अमृतवाणी

बिरछ = वृक्ष *पाथर* = पत्थर *तिराय* = उतराता (तैरता) *कदली* = केला
देह = शरीर देह = देना (दान करना) *दाम* = धन
उलीचिए = वितरित कीजिए (धन के संदर्भ में) बाहर फेंकिए (पानी के संदर्भ में)

नीति के दोहे

जेती = जितनी *जितै* = जिनकी *तिन* = उनकी *तेती* = उतनी, *सुआ* = तोता
बायस = कौआ *सराध पखु* = श्राद्ध पक्ष (पितर पक्ष) *बेर* = समय,
बोलियतु = बुलाते हैं *मनसरोजु* = मन रूपी कमल *समूल* = जड़ सहित
मयंक = चन्द्रमा *अगाध* = अथाह *औथरौं* = उथला,
सरु = सरोवर

❋ ❋ ❋